पंचम अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के उद्देश्य का अनुशीलन

पंचम अध्याय
मैत्रियी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानियों के उद्देश्य का अनुशीलन

5.1 मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का उद्देश्य -

हर एक कहानीकार का कहानी लिखने के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य होता ही है। आजादी के पहले सिर्फ मनोरंजन के लिए कहानियाँ लिखी जाती थी लेकिन आज कहानियों का मनोरंजन ही उद्देश्य नहीं रहा है। आजकल की कहानियाँ लिखने के पीछे समाज जीवन की समस्याओंका चित्रण करना, जनजीवन में जागृति करना आदि कई उद्देश्य भी हो सकते हैं। मनोरंजन करना उपदेशात्मकता को प्रस्तुत करना, कौतुहल को बढाना, हास्यसृष्टि का निर्माण करना, मानवी मन की पत्तों को खोलकर रखना, प्रचारवाद आदि कई उद्देश्य कहानी लिखने के पीछे हो सकते है। बिना उद्देश्य तो कहानी हो ही नहीं सकती। कहानी का जीवन-दर्शन या उद्देश्य एक बीज का कार्य करता है। बीज जितना शक्तिशाली हो, वृक्ष उतना ही मजबूत बनता है, उसी तरह जीवन-दर्शन या उद्देश्य का महत्त्व कहानी को सुदृढ बनाता है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के बारे में रमेश तैलंग लिखते है कि, "आज का ग्रामीण और नागरीय समाज एक संक्रमण काल से गुजर रहा है जिसका असर बरसों पोसी हमारी मानसिकता और संस्कारिता पर भी पड रहा है। बदलते वक्त के साथ एक मिश्रित संस्कृति जन्म ले रही है, जिससे अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही है। ग्रामीण संस्कृति में नागर संस्कृति के प्रवेश से 'ललमनियाँ' जैसे विख्यात पारंपारिक लोक-नृत्य गए जमाने की वस्तू होते जा रहे हैं और मोहरो जैसे लोक-कलाकार या तो जीविकार्जन के लिए कुछ और काम करने के लिए विवश हो गए हैं या फिर उनके भूखे मरने की नौबत आ पहुँची है। नागरीय समाज में शिक्षा संस्थान, छात्र राजनीति और अनाचार जैसी बुराइयों के अड्डे हो

चले है और मध्य-उच्च वर्गीय परिवारों जहाँ माता-पिता अनेक दबावों के चलते अपने बच्चों को क्रेश में डालकर मुक्त हो जाते हैं। एक अद्र्धविकसित चिडचिडी और बिगडेल स्वभाव वाली नई पीढी तैयार हो रही है। एक कथा-लेखिका के रूप में मैत्रेयी पुष्पा इन सभी सवालों और समस्याओं को अपनी कहानियों में उठाती है।''[1]

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ भी सिर्फ मनोरंजन मात्र के लिए लिखी नहीं गयी हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं को अधिक मात्रा में उठाया है और नारी को उन समस्याओं के प्रति आकृष्ट करना उनका उद्देश्य रहा है। विवेच्य कहानी संग्रहों को दृष्टिपात करने पर मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन के नारी को केंद्रित कर उसका चित्रण किया है। नारी के सामाजिक समस्याओं और पारिवारिक जीवन इन दोनों का उद्घाटन किया हुआ है। 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों में नारी का नारी के प्रति सहयोगी वृत्ति दिखाई देती है और एक तरफ नारी के प्रति नारी का विद्राही रूप भी देखने को मिलता है। 'सेंध' कहानी की स्वार्थी 'बौहरी' अच्छी जमीन पाने के लिए भ्रष्टाचार करती है। दूसरी ओर अन्याय-अत्याचार, भ्रष्टाचार का विरोध करनेवाली 'फैसला' कहानी की 'बसुमती', 'केतकी' कहानी की 'केतकी', 'बहेलिये' कहानी की 'गिरजा' और 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी की 'झरना' जैसी नारी अन्याय का विरोध करती है और न्याय की मशाल को प्रज्ज्वलित करती हैं। साथ ही नारी के अकेलेपन की समस्या को भी उठाया है लेकिन नारी के अकेलेपन में भी उसके स्वाभिमान को उजागर किया है। नारी की जो निस्वार्थी सेवाभावी वृत्ति है, उसको भी इसमें अंकित किया है। 'सिस्टर' कहानी की 'डिसूजा', 'रिजक' कहानी की 'लल्लन' जैसे नारी को दिखाकर मैत्रेयी पुष्पा ने नारी के कौन से भी क्षेत्र में कम न पडनेवाली रूप को दृष्टिगोचर किया है। साथ ही नारी को जब बच्चा नहीं होता उस समय उसे पुरूष के अत्याचारों का सामना करना पडता है यह भी हमें 'भँवर' कहानी की 'विरमा' के रूप में

देखने को मिलता है। नारी का जो अहम रूप बलिदान का है वही 'चिन्हार' कहानी की 'सरजू' के रूप में उजागर होता है। सरजू अपनी पुत्री 'कनक' को अच्छी परवरिश के लिए अपने मातृत्व को त्याग देती है। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी के अनोखे रूप को भी सामने रखने का प्रयास किया है और वह 'ललमनियाँ' कहानी की 'मौहरी' है, जो ललमनियाँ का नाच दिखाकर अपना और अपने बच्चे का पेट पाल रही है। अपने पति के शादी में नाच दिखाकर वह अपना दु:ख अपने पास ही रखकर अपना कर्तव्य पूरा करने का प्रयास करती है। नारी के जाति-पाति के बंधन तोडकर अपने प्यार को निभाने की वृत्ति भी 'मन नाँहि दस बीस' कहानी की चन्दना के रूप में अंकत होता है। अपने पति के साथ सदा एकनिष्ठ रहनेवाली 'सहचर' कहानी की 'छबीली' को दृष्टिगोचर किया है। पति के सुख को सुख और दु:ख को दु:ख माननेवाली एक पतिव्रत्ता नारी के रूप में वह उजागर होती है। दूसरे के बच्चे को अपने बच्चे से बढकर प्यार करनेवाली 'छाँह' कहानी की बेगम 'सन्नू' दिखाई देती है, जो कहानी की मनोभूमि करीब सुगबुगाहट, तिलमिलाहट और गर्माहट मौजूद है उसे मैत्रेयी पुष्पा ने अंकित किया है और वही तिलमिलाहट 'सिस्टर' कहानी में भी दृष्टिगोचर होती है साथ ही नारी के प्रति नारी की विद्रोही भावना 'तुम किसकी हो बिन्नी' कहानी की 'बिन्नी' जो माँ का प्यार पाने के लिए कुछ भी करने को तैया है और 'भँवर' कहानी की 'सूमन', 'विरमा' जो एक दूसरे से झगडा करती हुआी उजागर होती है। समाज में लडके ने आंतरजातीय वियाह किया हुआ चलता है लेकिन लडकी ने अंतरजातीय विवाह किया तो समाज उससे संबंध तोडता है इस धारणा पर बडा विद्रोह करनेवाली 'पगला गयी है भागवती......' कहानी की 'भागो' का रूप भी मैत्रेयी पुष्पा ने अंकित किया है। नारी की समाजसेवा वृत्ति को भी मैत्रेयी पुष्पा ने बडे अच्छे ढंग से सामने रखा है। ''आक्षेप'' कहानी की 'रमिया' को समाज के लोग एक बिगडी हुआी औरत के रूप में देखते है, लेकिन वह एक अच्छी, निस्वार्थी,

सेवा करती हुअी दिखाई देती है। अतः समाज उसे एक गिरी हुअी औरत कहता है, उसपर ध्यान न देकर वह अपने हाथों से जितना पुण्य हो सकता है उतना करती है। इस अनोखे रूप में नारी हमारे सामने उजागर होती है।

इस प्रकार सभी नारी को मैत्रेयी पुष्पा ने आलोच्य कहानियों में केंद्रित कर संसार में उन्हें जिन-जिन परिस्थितियों का सामना करना पडता है उन सभी का वर्णन इनमें दृष्टिगोचर होता है। सारा संसार ही इन कहानियों के माध्यम से सामने उभरकर आता है ऐसा प्रतीत होता है। इन कहानियों को पढकर आँखों के सामने ही घटनाचित्र स्पष्ट होता है इतनी यह कहानियाँ हृदय को छूकर जाती है। इन कहानियों को पढकर मैत्रेयी पुष्पा ने समाज के सभी अंगो को देखा है, जाना है और अपने अनुभवों को लिखा है ऐसा प्रतीत होता है। अतः शिक्षित, अनपढ, गँवार नारियों के रूपों की ओर लोगों का ध्यान खींचता ही उनका उद्‌देश्य रहा है और अपने उद्‌देश्य तक अपनी कहानियों को पहुँचाने में मैत्रेयी पुष्पा सफल हुअी है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी संग्रहों का केंद्र नारी को ही बनाया है, साथ ही इसमें पुरूषों का चित्रण है। 'फैसला' कहानी का 'रनवीर' एक भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, स्वार्थी, युवक के रूप में अंकित है। 'भँवर' कहानी का 'केशव' पैसों का लोभी, स्वार्थी दृष्टिगोचर होता है। 'कृतज्ञ' कहानी का 'अनुपम' भी स्वार्थी, मतलबी के रूप में उजागर होता है। 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी का 'प्रिंसिपल' एक असाह्य लडकी का शोषण करना चाहता है, 'केतकी' कहानी का 'गन्धर्वसिंह' केतकी पर जबरदस्ती करके खुले आम पंचायत में न्याय देने के लिए बैठा दृष्टिगोचर होता है। इन सभी के विरूद्‌ध 'बहेलिये' कहानी के 'मास्टर' जी अन्याय के प्रति आवाज उठाते है और उसी में अपनी जान गवाते हैं। साथ ही 'आक्षेप' कहानी का 'विशालनाथ' समाजसेवा करता है। एक प्रियकर के रूप में 'मन नाँहि दस-बीस' कहानी का 'स्वराज', 'सहचर' कहानी का 'बंसी' और 'सफर के बीच' कहानी का 'गिरराज' प्रस्तुत होते हैं। ईमानदार, सच्चे युवक के रूप में 'केतकी' कहानी में 'श्रीगोपाल' जो

अपनी बहू के पक्ष में अन्याय के विरूद्ध खडे रहते हैं और उसपर गर्व महसूस करते है। 'सेंध' कहानी का 'गंगासिंह' सरकार के चकबन्दी जैसे नियमों तले गरीब होते दृष्टीगोचर है। 'छाँह' कहानी के 'ददुआ' अपनी दो वक्त की रोटी करने की परेशानी और पोते की परवरिश के चिंताओं से घिरे दिखाई देते है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी संग्रहों में अनेक पुरुषों का वर्णन किया है और इसमें वह सफल भी हो चुकी है। उनकी कहानियों के स्त्री-पुरूष पात्रों को परिवेश के अनुकूल ढालना ही मैत्रेयी की कहानियोंका मूल उद्देश्य है। ग्रामांचालिक जनजीवन की कथा-व्यथा को चित्रित करना, नारी जीवन की शोषणवस्था पर प्रकाश डालना भी इनके कहानियों के उद्देश्य लगते हैं।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है, कि आधुनिक काल की महिला कहानीकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान मैत्रेयी पुष्पा प्राप्त कर चुकी हैं। उनकी कहानियाँ मानवीय धरातल पर यथार्थ रूप में प्रस्तुत है। उन्होंने अनेकानेक उद्देश्यों को अपनी कहानियों के लिए प्रयुक्त किया है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का मुख्य उद्देश नारी को केंद्रबिंदु मानकर उनके अन्याय, अत्यार को उजागर करना है। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि, मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का शिल्प अत्यंत ऊँचा रहा है। इसी कारण उनकी कहानियाँ प्रभावोत्पादक, आकर्षक, सुंदर बन गयी है। उद्देश्य की दृष्टि से मैत्रेयी की कहानियाँ श्रेष्ठ मानी जा सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ – सूची

1. रमेश तैलंग - समीक्षा - जनवरी मार्च - 1997 - पृ. 2